# 7

# व्यावहारिक, सामाजिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से रामलीला का महत्त्व

*दीपाली तिवारी**

*भारतीय संस्कृति अपने भीतर ऐसे अनेक पर्व एवं परम्पराएँ समेटे हुए है, जो समाज को न केवल धार्मिक आस्था से जोड़ती हैं, बल्कि नैतिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक जीवन के मूल्यों को भी स्थापित करती हैं। इन्हीं में से एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक परम्परा है—रामलीला। श्रीराम के जीवन एवं आदर्शों पर आधारित यह नाट्य परम्परा भारत के लोकमानस में गहराई से रची-बसी है। आस्था की दृष्टि से यह भक्ति का प्रतीक है, किन्तु व्यावहारिक दृष्टिकोण से यह जीवन के आदर्श मूल्यों का प्रयोगात्मक पाठ है। यह व्यक्ति एवं समाज दोनों को धर्म, नीति, मर्यादा एवं मानवता का व्यवहारिक मार्ग सिखाती है। रामलीला हमारे आराध्य प्रभु श्री राम के जीवन के उन समस्त प्रसंगों को रंग मंच पर प्रदर्शित करने की अद्‌भुत कला है जिससे मानव को संस्कारित एवं मर्यादित जीवन जीने की शिक्षा प्राप्त होती है। रामलीला मात्र एक धार्मिक नाटक ही नहीं अपितु भारत की संस्कृति नैतिकता एवं आध्यात्मिकता का जीवन्त दर्शन है इसमें प्रभु श्री राम के जीवन प्रसंगों के माध्यम से धैर्य, संयम, सत्य, त्याग, कर्तव्य एवं मर्यादा जैसे नैतिक मूल्यों का दृश्यांकन किया जाता है। रामलीला भक्ति एवं आत्मिक शान्ति का एक ऐसा स्रोत है जो मनुष्य में सकारात्मकता सद्‌भाव, प्रेम एवं सौहार्द का संचार करता है। मंचन के समय दर्शक न केवल भक्ति एवं श्रद्धा से रामलीला का दर्शन करते हैं अपितु उस समय वे राम के जीवन की अनुभूति को अपने भीतर समाहित भी करने लगते हैं। इस आध्यात्मिक अनुभूति से साधारण जन की मन बुद्धि व आत्मा का भी शुद्धिकरण हो जाता है। प्रस्तुत लेख में व्यावहारिक, सामाजिक एवं नैतिक दृष्टिकोण से रामलीला का महत्त्व को समझाने का प्रयास किया गया है। इसमें यह निष्कर्ष निकाला गया है कि रामलीला का समापन केवल कथा का अन्त नहीं, बल्कि जीवन के लिए एक*

* **पी-एच0डी0 एवं नेट, पूर्व शोध छात्रा, संस्कृत विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)।**

*नव प्रेरणा है जो हमें प्रेरित करती है कि हम अपने भीतर के रावण रूपी अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या एवं मोह का दहन करें तथा श्रीराम के समान धैर्य, करुणा, त्याग एवं कर्तव्यनिष्ठा को अपनाएँ।*

[**प्रमुख शब्द :** श्रीराम, रामलीला, भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्य, आत्मिक शान्ति, आध्यात्मिक अनुभूति, वाल्मीकि रामायण, रामचरित मानस, रामराज्य।]

यूँ तो रामायण में राम की कथा का अनेक प्रसंगों द्वारा वर्णन किया गया है किन्तु राम एक विराट व्यक्तित्व हैं और इस विराट को कितनी ही चेष्टा क्यों न कर ली जाए उसे सम्पूर्ण पकड़ना असम्भव है। कहा भी गया है कि—

।।हरि अनंत हरि कथा अनंता।।

ऐसे अनंत की लीला का प्रदर्शन आप कुछ घण्टों, कुछ दिनों या कुछ महिनों में कैसे कर सकते हैं, इसीलिए रामलीला में ऐसे प्रसंगों को लिया जाता है जिसमें स्वयं परमात्मा नारायण से नर के रूप हमारे समक्ष आए और कुछ ऐसे प्रसंग जिनके कारण वे नर से नारायण बनकर समस्त विश्व पटल पर विस्तरित हो गए। वाल्मीकि रामायण में वर्णित है—

''रामो विग्रहवान् धर्मः''

अर्थात् ''राम स्वयं धर्म का मूर्त रूप हैं।''

वस्तुतः राम, एक दिव्य पुरुष, विष्णु अवतार या ईश्वर मात्र ही नहीं हैं अपितु वह स्वयं धर्म हैं। यहाँ पर यह समझना भी आवश्यक है कि धर्म क्या है? एक पंक्ति में यदि धर्म की विवेचना की जाए तो धर्म वह है जिसे धारण किया जाए और श्री राम का तो सम्पूर्ण जीवन ही अनुकरणीय एवं धारण करने योग्य है यही कारण है कि प्रभु श्री राम को साक्षात धर्म माना गया है और उनके जीवन के माध्यम से निरन्तर यह शिक्षा देने का प्रयास किया जाता रहा है कि व्यक्ति को धर्म को केवल मानना नहीं, बल्कि जीना भी चाहिए।

पिता का वचन एवं माता का आदेश राम के लिए सबसे बड़ा धर्म है। इसीलिए जब कैकेयी राम को महाराज दशरथ के दोनों वचन बताती है तब राम मुस्कराते हुए बहुत विनीत स्वर में कहते हैं—

''न मेऽस्त्यभ्यधिकं किञ्चित् पित्रा यन्निदेशितम्।
सदा च प्रियकृत् तस्य भविष्याम्यहमेव हि?''

अर्थात् पिता का आदेश मेरे लिए सबसे बड़ा धर्म है। मैं सदैव वही करूँगा जो उन्हें प्रिय हो।

तत्पश्चात् अपने पिता को सांत्वना देते हुए राम कहते हैं कि—

''न ममास्ति पितुः किञ्चिदाज्ञा विहितमप्रियम्।
तथैव करिष्याम्यद्य वनवासं व्रजाम्यहा।।''

अर्थात् पिता की कोई आज्ञा मेरे लिए अप्रिय नहीं हो सकती। अतः मैं आज ही प्रसन्नतापूर्वक वन को प्रस्थान करता हूँ।

राम वन गमन के समय मां कौशल्या की पीड़ा अत्यन्त असहनीय हो जाती है, हृदय में कम्पन सा है, शरीर की नाड़ियाँ निष्प्राण होने लगी हैं। राम के वनगमन से माँ कौशल्या के जीवन की सारी आशाएँ क्षीण होने लगती हैं, फिर भी वह अपनी मनोव्यथा से उबरने के लिए स्वयं को स्वयं ही समझाने का प्रयास करती दिखाई देती हैं। यह प्रसंग मानस की करुण व्यथा को प्रतिबिंबित करता है, माता कौशल्या को बार-बार द्रवित होते देख कर भगवान राम उनको हृदय से लगा कर कहते हैं कि—

''सुनु जननी सोई सुतु बड़भागी। जो पितु मातु बचन अनुरागी।
चारि पदारथ करतल ताके, प्रिय पितु मातु प्रान सम जाके।।''

अर्थात् हे माँ! पुत्र वही है जो माता-पिता के वचनों का अनुरागी हो और इस जगत में उसी का जन्म धन्य है, जिसको माता-पिता प्राणों के समान प्रिय हैं, उसके करतल (मुट्ठी) में चारों पदार्थ अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष रहते हैं।

आज जब माता-पिता वृद्ध आश्रम में रहने के लिए मजबूर हैं, तब रामचरित मानस का यह प्रसंग बुजुर्गों के लिए सतत प्रेम का मार्ग प्रशस्त करने का कार्य करता है। रामलीला के मंचन में यह दिखाने का प्रयास किया जाता है कि माता पिता के स्नेह एवं दर्शन से जीवन हरा-भरा हो उठता है और उनके आशीर्वाद से आप संसार के समस्त संसाधन प्राप्त कर सकते हैं अतः माता पिता की अवहेलना कदापि नहीं करना चाहिए। रामलीला में राम का पिता की आज्ञा से वनगमन यह सिखाता है कि कर्तव्यपालन एवं आज्ञापालन जीवन की सफलता के मूल हैं। रामलीला का उद्देश्य यही है कि मानव के समक्ष समय समय पर प्रभु की लीलाओं को प्रदर्शित किया जाए ताकि शत-प्रतिशत न सही कुछ प्रतिशत तो मनुष्य के जीवन में राम प्रवाहित हो ही जाएँगे।

श्रीराम एक आदर्श शासक थे, उनका शासन 'रामराज्य' कहलाता था क्योंकि वह शासन न्याय, समता एवं लोककल्याण पर आधारित था। उन्होंने सत्ता को सदैव सेवा का साधन माना और एक सर्वोत्तम शासन व्यवस्था के लिए भी प्रेरणा स्रोत बनें।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामराज्य का वर्णन करते हुए कहा है—

''सब नर करहिं परस्पर प्रीती चलहिं स्वधर्म निरत श्रुतिनीती।''

श्री राम की ईश्वरीय शक्तियों का ज्ञान होने के कारण मारीच ने सीता हरण के लिए रावण की सहायता करने को मना कर दिया तो रावण ने उसे मृत्यु का भय दिखाया। मारीच ने अधर्म के हाथों मृत्यु से अच्छा धर्म अर्थात् श्री राम के द्वारा मिली मृत्यु को श्रेष्ठ माना क्योंकि उसे ज्ञात है कि प्रभु राम की दृष्टि मात्र से ही मोक्ष प्राप्त हो जाता है। राम के सम्पर्क में आते ही उनकी कृपा की बरसात होना तो एक स्वभाविक प्रक्रिया के समान ही है। इसी बात को इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि यदि किसी बिजली के तार को पकड़ा जाए तो करण्ट लगना स्वाभाविक है किन्तु यदि करण्ट नहीं लगा तो यह स्पष्ट है कि तार में ऊर्जा का संचालन नहीं हो रहा है क्योंकि यदि ऊर्जा है और उसका संचालन भी हो रहा है तो उसके सम्पर्क में आते ही आपको

करण्ट अवश्य ही लगेगा। ठीक उसी प्रकार परमात्मा श्री राम भी असीम ऊर्जा से भरपूर है और इस ईश्वरीय शक्ति के सम्पर्क में आने पर भी यदि आपका चित्त चरित्र एवं चिन्तन नहीं बदला तो आप प्रभु श्री राम के अस्तित्व पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं क्योंकि श्री राम के अस्तित्व के सम्पर्क में आप आशंकित चित्त से ही क्यों न आयें वे आपको निश्चित ही निःशंक करेंगे। नकारात्मक भाव या बिना किसी भाव से भी यदि आप श्री राम के ऊर्जा क्षेत्र में प्रवेश कर चुके हैं तो भी आपके अन्तर्मन में प्रकाश होना निश्चित है फिर चाहे आपके अन्तर्मन में कितना ही तमस क्यों न भरा हो। प्रभु राम के प्रेम और भक्ति में डूबे भक्तजनों का कहना भी है कि—

''अपने प्यारे राम को रीझ भजो या खीज।

खेत पड़े बढ़ जात है उलटो सीधो बीज।।''

ये दोहा स्पष्टतः बता रहा है कि जिस प्रकार एक उपजाऊ खेत में बीज को किसी भी भाँति फेंक दो वह बढ़ ही जाता है और एक दिन अपने उत्कर्ष को प्राप्त होता है उसी प्रकार राम का नाम चाहे प्रसन्न मन से लो चाहे क्रोधित होकर, चाहे राम को दुःखी मन से पुकारो चाहे मस्ती में भजन कीर्तन करो, राम का तो नाम ही तारन हारा है और राम नाम का जाप ही उत्कर्ष प्रदाता है।

रामलीला के पात्र मात्र पौराणिक आदर्श नहीं हैं वरन् वे व्यवहारिक जीवन के उत्कृष्ट मार्गदर्शक हैं।

श्रीराम का राजधर्म पालन हमें सिखाता है कि शासन में न्याय एवं सत्य सर्वोपरि हैं।

सीता का धैर्य, संयम एवं कर्तव्य परायणता उनकी धर्म के प्रति अनन्य भक्ति को प्रदर्शित करते हैं।

भरत का भ्रातृप्रेम एवं त्याग नेतृत्व में विनम्रता का प्रतीक है।

लक्ष्मण की भाई-भाभी के प्रति सेवा एवं भक्ति पारिवारिक प्रेम और समृद्धि की द्योतक है।

हनुमान का सेवा-भाव, निष्ठा एवं स्वामी भक्ति, कर्मशीलता और समर्पण का आदर्श है।

रामलीला में सीता एक पौराणिक नायिका के रूप में नहीं, अपितु नारीत्व की आदर्श प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत होती है। यहाँ दर्शकों के समक्ष सीता के व्यक्तित्व एवं चरित्र के विभिन्न आयामों—धर्म, मर्यादा, त्याग, आत्मबल एवं मातृत्व का मंचन कर यह स्पष्ट किया जाता है कि सीता भारतीय नारी के आत्म-सम्मान, सहनशीलता एवं शक्ति का सर्वोच्च प्रतीक हैं।

''नारीणां गुणसम्पन्ना सीता लोकवन्दिता।''

अर्थात् सीता स्त्रियों में गुणों की परिपूर्णता रखती हैं, अतः वे लोक में वन्दनीया हैं।

सीता नारी के सर्वोच्च गुणों का प्रतिरूप हैं। उनका जीवन धर्म एवं नीति का व्यावहारिक उदाहरण है। वे जहाँ एक ओर पति के प्रति निष्ठा का प्रतीक हैं, वहीं दूसरी ओर आत्मबल एवं आत्मसम्मान की मूर्ति भी हैं।

''भूमिजा भूमिसुता सर्वलोके नमस्कृता।''

सीता का जन्म पृथ्वी से हुआ, जिससे वे प्रकृति की सृजनशक्ति का प्रतीक कहलाती हैं। सीता ने पति के साथ स्वेच्छा से वनवास स्वीकार किया और कठिन परिस्थितियों में भी पतिव्रता धर्म का पालन किया।

''पतिव्रता धर्मपत्नी धर्मस्य मूलं स्मृतम्।''

सीता का यह पक्ष नारी की निष्ठा एवं आत्म-नियंत्रण का आदर्श रूप है। सीता का त्याग राजसी जीवन का परित्याग नहीं, बल्कि आंतरिक स्वतन्त्रता की घोषणा है।

''नारी स्वभावेन नम्रास्तु परन्तु न दुर्बला।''

रामलीला मंचन में सीता के माध्यम से दर्शकों को यह सिद्ध किया जाता है कि विनम्रता और दृढ़ता का अद्भुत संगम नारी के स्वभाव में निहित है। अतः नारी को अबला या निर्बल समझने की भूल न करें। वस्तुतः सीता मात्र एक आज्ञाकारी पत्नी नहीं हैं अपितु आत्मबल एवं आत्मसम्मान की प्रतिमा हैं। उनका जीवन यह सिखाता है कि संयम एवं धर्मनिष्ठा में ही सच्चा सशक्तिकरण निहित है।

रामलीला के मंचन में भरत एक अत्यन्त गौरवपूर्ण व्यक्तित्व का प्रदर्शन करते दिखाई देते हैं। वे न केवल भ्रातृ-प्रेम के प्रतीक हैं, बल्कि धर्म, नीति एवं त्याग के आदर्श रूप में भी प्रतिष्ठित हैं। वाल्मीकि रामायण एवं रामचरितमानस में भरत का चरित्र निःस्वार्थ प्रेम, नैतिकता एवं आदर्श नेतृत्व का प्रतिनिधित्व करता है। रामलीला का उद्देश्य भरत के जीवन का मंचन कर यह स्पष्ट करना है कि वे भारतीय मूल्य-व्यवस्था में त्यागमूर्ति एवं धर्मनिष्ठ शासक के रूप में क्यों पूजनीय हैं।

''धर्मे स्थितो धर्मपथानुवर्ती भरतः प्राज्ञो रघुनन्दनः।''

अर्थात् भरत सदैव धर्म में स्थित रहे और धर्ममार्ग का पालन करते हुए राम में ही लीन रहे।

जब माता कैकेयी के वरदानों के कारण राम को वनवास मिला, तब भरत ने सत्ता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। उन्होंने न केवल राजसुख का त्याग किया, वरन् राम की चरणपादुका सिंहासन पर रखकर राज्य संचालन का उत्तरदायित्व निभाया। भरत का भ्रातृ-प्रेम अतुलनीय है। उन्हे भैया राम के अतिरिक्त कुछ भी मान्य नहीं।

''राज्यं न मे प्रियं रामात् सर्वं रामे प्रतिष्ठितम्।''

अर्थात् मुझे राज्य प्रिय नहीं क्योंकि मेरा सब कुछ राम में ही निहित है।

भरत का जीवन आध्यात्मिक भक्ति का उदाहरण है। उनका राम-प्रेम निष्काम भक्ति की श्रेणी में आता है।

''निष्कामो हि सदा भक्तः प्रियः श्रीरामस्य सदा।''

अर्थात् जो निष्काम भाव से भक्ति करता है, वही राम को प्रिय है।

आज के युग में जहाँ स्वार्थ एवं सत्ता की राजनीति प्रमुख है, वहाँ भरत का आदर्श त्याग, निष्ठा और सेवा की प्रेरणा देता है।

रामलीला में रामायण के एक एक पात्र का वंदनीय चित्रण प्रस्तुत किया जाता है जो प्रत्येक वर्ष समाज को चिन्तन एवं मनन करने के लिए बाध्य करता है। राम लक्ष्मण एवं माता सुमित्रा के मध्य होने वाले सम्वादों के माध्यम से उस समय अथवा काल की रिश्तों के प्रति उदारता एवं उत्कृष्टता का उदाहरण दृष्टव्य है—

> जब राम चौदह वर्ष के वनवास को जाने को उद्यत होते हैं तब उद्द्वेलित, क्रोधित एवं द्रवित लक्ष्मण भी साथ चलने को कहते हैं। राम उन्हें समझाने का प्रयास करते हैं और कहते हैं कि वनवास मुझे मिला है तुम्हें नहीं, तुम यहाँ रहकर माता पिता और गुरु की सेवा करो। उत्तर में लक्ष्मण कहते हैं कि—
>
> ''गुरु पितु मातु न जानऊँ काहू, कहउँ सुभाउ नाथ पतिआहू।।''

तब निरुत्तरित होकर राम लक्ष्मण को माता सुमित्रा से अनुमति लेने के लिए भेजते हैं। लक्ष्मण माता के पास आज्ञा लेने जाते हैं तो माता सुमित्रा का राम सीता के प्रति स्नेह और विश्वास देखकर आँखे नम हो जाती हैं। वे लक्ष्मण से कहती हैं—

''तात तुम्हारि मातु बैदेही, पिता रामु सब भाँति सनेही।।
अवध तहाँ जहाँ राम निवासू, तहँइं दिवसु जहाँ भानु प्रकासू।।''

हे पुत्र! आज से तुम्हारी माता सीता एवं पिता राम हैं। तन मन से उनकी सेवा करना। पुत्र! जहाँ राम हैं वहीं अयोध्या हैं, जहाँ सूर्य उदय होता है वहीं दिन होता है। आज से अयोध्या की रात आरम्भ हो गई है क्योंकि अयोध्या का सूर्य कल से यहाँ नहीं दिखाई देगा! और राम के बिना तुम्हारा भी अयोध्या में कोई कार्य नहीं तो यहाँ रहकर भी क्या ही करोगे? जाओ पुत्र अपना धर्म निभाओ।

ऐसा जीवन चरित्र तो मात्र राम के सानिध्य में ही प्राप्त हो सकता है।

लक्ष्मण का तो सम्पूर्ण जीवन राम की सेवा एवं सुश्रुषा में ही रहता था, उनके लिए राम के अतिरिक्त कुछ भी आवश्यक नहीं था। रघुकुल या राम के प्रति एक भी अप्रिय शब्द उन्हें मान्य नहीं था। इसीलिए सभा में राजा जनक के मुख से यह सुनकर कि पृथ्वी वीरों से रहित हो गई है लक्ष्मण के लिए असहनीय हो गया। इसे रघुकुल का अपमान मानते हुए वे स्वयं को रोक न सके—

''कहि न सकत रघुवीर डर, लगे वचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिरु, बोले गिरा प्रमान।।
सुनहु भानुकुल पंकज भानू, कहऊँ सुभाउ न कछु अभिमानू।
जौं तुम्हारि अनुसासन पावौ, कंदुक इव ब्रह्माण्ड उठावौ।।''

रामायण पर आधारित रामलीला हनुमान जी के रूप में धर्म एवं भक्ति का अनन्य संगम प्रस्तुत करती है। उनका चरित्र राम के प्रति भक्ति, निष्ठा एवं समर्पण का अद्‌भुत उदाहरण है। हनुमान न केवल राम के सेवक हैं, बल्कि उनके अभिन्न भक्त एवं आदर्श कर्मयोगी के रूप में प्रतिष्ठित हैं ।

उनकी निष्काम भक्ति में कोई लोभ, भय या स्वार्थ नहीं है। उनके पास अपने प्रभु राम के कार्य की सिद्धि में तनिक भी विश्राम के लिए कोई स्थान नहीं। तुलसीदास ने हनुमान की भक्ति का वर्णन करते हुए लिखा है—

''राम काज कीन्हे बिनु मोहि कहाँ विश्राम।''

यह पंक्ति दर्शाती है कि उनके लिए सेवा ही साधना और राम ही परम लक्ष्य थे। हनुमान की निष्ठा राम के प्रति पूर्ण समर्पण में दिखाई देती है। सीता की खोज के कठिन कार्य में उन्होंने अपनी बुद्धि, शक्ति न्न साहस का उपयोग बिना किसी अहंकार के किया।

वे कहते हैं—

''सो सब तव प्रताप रघुराई। नाथ न कछू मोरि प्रभुताई।।''

यह विनम्रता उनकी भक्ति को और भी पवित्र बनाती है। वे अपने को 'राम का दास' मानते हैं, और यही पहचान उनके लिए परम सम्मान है।

हनुमान का पराक्रम राम के आदर्शों की रक्षा हेतु समर्पित था। लंका दहन, रावण से संवाद, और अशोक वाटिका में सीता से भेंट—रामलीला में इन सभी घटनाओं का प्रदर्शन ये दर्शाता है कि वे केवल बलवान ही नहीं, बल्कि धार्मिक, विवेकशील एवं परम योद्धा भी हैं।

रावण को चेताते हुए उन्होंने कहा—

''राम सत्य हैं, धर्म के प्रतीक हैं; उनसे विरोध विनाश का मार्ग है।''

यह कथन उनकी दूरदर्शिता एवं नीति-निष्ठा को प्रकट करता है।

हनुमान के लिए मोक्ष का अर्थ राम के चरणों में नित्य सेवा प्राप्त करना है। जब राम ने उन्हें गले लगाया, तो उन्होंने कहा।

''अब मोहि नाथ देहु कछु नाई, सेवा सुख परम पावन पाई।''

उनकी दृष्टि में सेवा ही मुक्ति है और राम ही परम तत्व हैं। उनका यह आत्मसमर्पण भक्ति के दास्य भाव की पराकाष्ठा है।

वे न केवल राम के भक्त हैं, बल्कि आदर्श मानव के प्रतीक हैं—जिनमें शक्ति के साथ नम्रता, बुद्धि के साथ विनम्रता एवं भक्ति के साथ कर्मयोग का संगम है। उनकी योग्यता को देखकर सीता जी उन्हें वरदान देती हैं—

''अजर अमर गुण निधि सुत होऊ''

यह प्रमाण है कि हनुमान की भक्ति ने उन्हें अमरत्व एवं ईश्वर-सन्निकटता प्रदान की। उनका जीवन पूर्णतः राममय है। शोधात्मक दृष्टि से देखा जाए तो हनुमान का चरित्र 'भक्ति में कर्म का समावेश' सिद्धान्त को प्रतिपादित करता है। वे यह सन्देश देते हैं कि सच्ची भक्ति केवल भाव में नहीं, बल्कि कर्तव्यपरायणता एवं समर्पण पूर्ण कर्म में निहित है।

आधुनिक युग की अनियमित जीवनशैली एवं भागमभाग भरी जिन्दगी में व्यावहारिक, सामाजिक एवं नैतिक ज्ञान के भण्डार से भरा पवित्र ग्रन्थ राम चरित मानस/रामायण को पढ़ने और सुनने का समय ही किसके पास है, ऐसे में रामलीला के माध्यम से सहज ही हमें श्री राम जी के आदर्शों एवं उनकी नैतिक शिक्षाओं का ज्ञान प्राप्त हो जाता है।

आप देख सकते हैं कि एक ओर जहाँ हम अपने मित्रों से भी अपने अनुकूल कार्य नहीं करवा पाते हैं वहीं दूसरी ओर श्री राम अपने शत्रु जिसका वध करने के लिए ही उन्होंने जन्म लिया है, से भी अपने अनुकूल कार्य करवा रहे हैं और उस शत्रु को ही पुरोहित बनाकर उससे विजयी होने का आशीर्वाद भी प्राप्त कर रहे हैं। प्रभु श्री राम का यह कार्य जीवन के प्रति सकरात्मक सोच का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आपकी सोच सकरात्मक है और आप अपने शत्रु का भी सम्मान करने के साथ ही साथ उसके अवगुणों का नहीं वरन उसके गुणों का प्रचार करते हैं तो वह शत्रु भी आपके कार्य में बाधक नहीं अपितु साधक बन जाता है।

विनम्रता, सहजता एवं सहिष्णुता से हम भयंकर क्रोधी और बलवान व्यक्ति के क्रोध को भी क्षण भर में नष्ट कर सकते हैं और अपना अनिष्ट होने से बचा सकते हैं और आपके क्रोधी स्वभाव को भड़का कर आपको व्यथित करके किस प्रकार आपका अनिष्ट किया जा सकता है ये व्यावहारिक ज्ञान भी राम लक्ष्मण एवं परशुराम के सम्वादों के माध्यम से दर्शकों को शिक्षित करने का एक उत्तम प्रयास है।

रामलीला के मंचन में बाली वध के माध्यम से प्रत्येक वर्ष समाज में ये शिक्षा देने का प्रयास किया जाता है कि नारी का अपमान करने की सजा मात्र और मात्र मृत्यु दण्ड है फिर चाहे इस अपराध को करने वाला प्रभु का भक्त ही क्यों न हो!

रामलीला का आयोजन सामूहिक होता है—इसमें कलाकार, संगीतकार, वस्त्र-निर्माता, आयोजक एवं दर्शक सब सहभागी होते हैं। इससे समाज में सहयोग, अनुशासन एवं बन्धुत्व की भावना जन्म लेती है।

भारत के विभिन्न प्रदेशों में रामलीला के विविध रूप हैं—जैसे अयोध्या, वाराणसी, चित्रकूट, मथुरा, मध्य प्रदेश, नेपाल और दक्षिण भारत तक। यह विविधता भारत की सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय भावना को सशक्त करती है। रामलीला के विषय में कहा जा सकता है कि—

''एकं सत् विप्रा बहुधा वदन्ति।''

अर्थात् सत्य एक है, पर उसे अनेक रूपों में कहा जाता है।

आधुनिक युग में जहाँ भौतिकता एवं प्रतिस्पर्धा ने मनुष्य को तनावग्रस्त बना दिया है, वहीं रामलीला एक मनोवैज्ञानिक शुद्धि एवं आध्यात्मिक सन्तुलन का साधन बनती है। रामलीला के

दर्शन से मनुष्य के भीतर श्रद्धा, करुणा, आस्था एवं भक्ति की भावना उत्पन्न होती है, जो व्यावहारिक रूप से जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है। रामलीला का व्यावहारिक महत्त्व धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भारतीय समाज के नैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग है। यह व्यक्ति को मर्यादा, सत्य, सेवा, और कर्तव्यपालन की प्रेरणा देती है तथा समाज को एकता, सहयोग एवं नैतिकता के सूत्र में बाँधती है।

विभिन्न समाजशास्त्रीय अध्ययनों में भी पाया गया है कि जहाँ रामलीला जैसे सांस्कृतिक आयोजन नियमित रूप से होते हैं, वहाँ अपराध दर, पारिवारिक तनाव एवं सामाजिक विभाजन कम होते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि रामलीला व्यक्ति एवं समाज दोनों के नैतिक सन्तुलन एवं व्यवहारिक परिपक्वता की संवाहक है।

## उपसंहार

रामलीला केवल एक नाट्य मंचन नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, मर्यादा एवं आदर्शों की सजीव झाँकी है। इसके प्रत्येक प्रसंग में धर्म की विजय, अधर्म का पतन और मानवता का उत्थान झलकता है। श्रीराम का चरित्र हमें यह सिखाता है कि जीवन में चाहे कितनी ही विपत्तियाँ क्यों न आएँ, मर्यादा एवं सत्य के मार्ग से विचलित नहीं होना चाहिए। आज समाज में जहाँ नैतिक मूल्यों का निरन्तर ह्रास होता जा रहा है, वहाँ श्रीराम के आदर्श पुनः मानवता के पुनर्निर्माण का पथ प्रदर्शित करते हैं।

रामलीला का समापन केवल कथा का अन्त नहीं, बल्कि जीवन के लिए एक नव प्रेरणा है जो हमें प्रेरित करती है कि हम अपने भीतर के रावण रूपी अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या एवं मोह का दहन करें तथा श्रीराम के समान धैर्य, करुणा, त्याग एवं कर्तव्यनिष्ठा को अपनाएँ।

जब मंच पर 'जय श्रीराम' एवं 'जय सिया राम' का उद्घोष गूँजता है, तब केवल दर्शक नहीं, पूरी सृष्टि उस दिव्य भाव में एकाकार हो जाती है। यह उद्घोष मात्र भक्ति का भाव नहीं है बल्कि यह धर्म, नीति, त्याग, संयम एवं आदर्श जीवन का प्रतीक भी है क्योंकि इस उद्घोष में प्रतिष्ठित माता सीता और प्रभु श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन समाहित है और यही रामलीला का परम सन्देश भी है।

इस प्रकार, रामलीला हमें न केवल धर्म की शिक्षा देती है अपितु मर्यादाओं में रहकर, प्रेम एवं न्याय के साथ जीना भी सिखाती है। अनेकों शिक्षाओं से भरा है राम चरित मानस का भण्डार। बस आवश्यकता है कि हम राम, रामायण और रामलीला को अपने हृदय स्थल के साथ साथ मन, कर्म और वाणी में भी स्थान दें तभी हम सही मायने में रामलीला के साक्षी बन पाएँगे।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है ''रामलीला केवल अभिनय नहीं, आचरण की साधना है; यह धर्म का नहीं, जीवन के व्यवहार का उत्सव है।'' ★

https://doi.org/10.62047/JNDH.2025.10.31.57